बी॰ ए॰-भाग-2
हिन्दी-रचना-
उपेन्द्रनाथ अश्क

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर (बिहार)

उपेन्द्रनाथ अश्क लिखित 'तौलिए' शीर्षक एकांकी की समीक्षा

'तौलिए' शीर्षक एकांकी में एकांकीकार उपेन्द्रनाथ अश्क ने कला और शैली दोनों दृष्टियों से आधुनिकता का समावेश करने और आधुनिकता की अतिवादिता का एक उदाहरण प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

आधुनिकता की अतिवादिता से ग्रस्त दृष्टिकोण वाले व्यक्ति प्रायः समग्रता में ही इस तरह और प्राचीन मूल्यों को अस्वीकार कर देते हैं कि सामाजिक आस्था ही संकट में पड जाती है। यहाँ तक कि वे इस बहाव में यथार्थ सत्य आदि को भी नहीं बख्शते। इसके साथ ही कहानी में आधुनिकता से प्राचीनता की टकराहट का भी एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

वसंत एक सामान्य परिवार का लड़का है। उसकी शादी संभ्रांत परिवार में पली-बढ़ी मधु से हो जाती है। मधु सफाई पसंद लड़की है और वसंत अपने परम्परागत ढंग पर रहने का अभ्यस्त है। यही मजबूरी दोनों के जीवन में खटास घोलकर रख देता है। एकांकी के कथानक का तानाबाना इन्हीं दोनों पात्रों में मधु और वसंत की नोक-झोक, स्वयं को सही और दूसरे को गलत सिद्ध करने के प्रयासों के सहारे चुना गया है। दोनों पति-पत्नी एक ही सिक्के के दो पहलू नजर आते हैं। इस एकांकी के प्राण उसके कथोपकथन हैं जिसके माध्यम से पात्रों की मानसिकता का चित्रण भी हुआ है और कथा विकास को गति मिली है। एकांकी में कार्य और

स्थान की एकता तो है किन्तु समय की एकता का अभाव है। बावजूद इसके, प्रभाव की दृष्टि से यह एक सफल एकांकी है।

अथक जी ने श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों एवं प्रगतिशील मूल्यों को अपनाते हुए आधुनिक जीवन दृष्टि विकसित करने पर जोर दिया है। सामाजिक यथार्थ चित्रण के साथ ही उन्होंने व्यक्ति के अन्तर्गत की समस्याओं और द्वन्द्वों को भी अपने इस एकांकी में प्रस्तुत किया है। उन्होंने एकांकी शिल्प में परिपक्वता और आधुनिकता लाने के लिए लगातार प्रयास किए। रंगमंचीय अपेक्षाओं को ध्यान में रखते हुए और उन्हें यथासंभव त्रुटिपूर्ण कलात्मक स्वरूप प्रदान करने का अथक प्रयास किया है।

इस एकांकी के पात्र-विधान में एकांकीकार ने संयम से काम लिया है। मुख्य पात्र वसंत और मधु ही हैं परन्तु, मंगला, चिन्ती, सुरो आदि की महत्ता की अनिवार्यता निर्विवाद ही मानी जाएगी। चिन्ती का सुरो का आयोजन मधु के चारित्रिक निखार के साथ ही एकांकी के तेवर को तीक्ष्णता प्रदान करता प्रतीत होता है।

नाट्य कला की दृष्टि से इस एकांकी के संवाद सरल, संक्षिप्त और भावानुकूल हैं। चूँकि इसके पात्रों की चरित्र में ही शिथिलता या गतिहीनता है इसलिए संवादों में उतने चुकीलेपन की अपेक्षा नहीं की जा सकती।

फिर भी वसंत का मधु के प्रति व्यक्त संवाद, मधु का वसंत के प्रति व्यक्ति संवाद एकांकी की शिथिलता को अचानक गत्वरता देते दिखाई पड़ते हैं। एक सामान्य से कथन को सफल एकांकी के रूप में प्रस्तुत करने मे इन संवादों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एकांकी के पात्रों के अपने अलग-अलग व्यक्तित्व में सक्रियता तथा आकर्षण होतें हैं, परन्तु एकांकी की समग्रता में किसी भूमिका पूर्णता को प्राप्त नहीं कर पाती। इस दृष्टि से वसंत और मधु ही दो अनिवार्य पात्र बच जाते हैं। अन्य पात्रों का निचन स्वलक्षणशील की गरिमा प्राप्त नहीं कर पाते।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट- प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज डुमराँव
बक्सर - (बिहार)